❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स्तोतुर्मघवन् काममा पृण।।
ऋग्वेद 1/57/5

हे ऐश्वर्यशालिन् ! भक्त की कामनाओं को पूर्ण कर।
O the Bounteous Lord! fulfil all the good wishes and desirer of your devotees.

वर्ष 40, अंक 29 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 15 मई, 2017 से रविवार 21 मई, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में

देश भर के आदिवासी, वनवासी, पिछड़े क्षेत्रों से पधारे कर्मठ आर्य कार्यकर्त्ताओं का

36वां वैचारिक क्रान्ति शिविर : उद्घाटन समारोह सम्पन्न

समापन समारोह : 28 मई मावलंकर हॉल, कॉस्टीट्यूशन क्लब नई दिल्ली में

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा आयोजित 36वें वनवासी वैचारिक क्रांतिशिविर का शुभारम्भ 14 मई को आर्य समाज रानी बाग में महाशय धर्मपाल जी (एम डी एच ग्रुप) ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, वैदिक विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार, आर्य केन्द्रीय सभा के महामंत्री सतीश चड्डा, नागालैण्ड से रमाशंकर जी, असम से राजू शास्त्री एवं दिल्ली के विभिन्न आर्य समाजों से कई गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए साथ ही माता ईश्वर रानी, माता राज मल्होत्रा, सुषमा चावला, हुमेशा आर्य, विनय खुराना भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। मंच संचालन करते हुए सेवाश्रम संघ के महामंत्री जोगेन्द्र खट्टर जी ने महाशय जी के बामनिया, धनश्री एवं देवधर झारखण्ड के विद्यालय के निर्माण के लिए अनेक-अनेक धन्यवाद किये एवं ईश्वर से उनकी स्वास्थ्य, दीर्घायु की कामना की। महाशय जी ने उपस्थित लोगों से कहा कि मुझे आशीर्वाद दो कि मैं ऐसे धर्म के काम करता रहूं। इस अवसर

– शेष पृष्ठ 8 पर

भारत के आदिवासी क्षेत्रों में आर्य समाज

इस चर्चा में आगे बढ़ने से पहले एक बात याद आ गयी कि जब पिछले वर्ष 2016 में नेपाल में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के मंच से उत्तर प्रदेश के वर्तमान मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथ जी ने वहां उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा था कि आप सब आर्य समाज से जुड़े हैं, आपके लिए यह गौरव की बात होनी चाहिए। आज मुझे इस बात को दोबारा लिखते हुए उतने ही गर्व की अनुभूति हो रही है जितनी उस दिन हजारों की संख्या में उपस्थित जनसमुदाय को हुई थी। गर्व की अनुभूति इस वजह से हो रही है कि आर्य समाज जिस गति से राजनैतिक और मीडिया के शोर बिना अपने लक्ष्य में निरन्तर आगे बढ़कर प्रगति कर रहा है। आने वाले समय में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का सपना सच होता ज्यादा दूर नहीं लगता।

पिछले कुछ सालों में आर्य समाज ने ज्ञान के साथ-साथ सेवा के क्षेत्र में बिना किसी भेदभाव के अपने कदम आगे बढ़ाये और उन लोगों के मध्य पहुंचा जिन्हें 21वीं सदी में भी आदिवासी, वन्यजाति, वनवासी तथा अनुसूचित जनजाति आदि नामों से संबोधित किया जाता है; लेकिन यह सब इस हिन्दू समाज का हिस्सा होने के साथ इसी भारत माता की सन्तान हैं। बस शिक्षा और संसाधनों के अभाव के कारण अभी मुख्यधारा से थोड़ा दूर है। लेकिन इस दूरी को खत्म करने के लिए आर्यसमाज अपनी पूरी लगन, निष्ठां के साथ इनके विकास के लिए कार्य कर रहा है। आर्य समाज उन विदेशी पर्यटकों या फोटोग्राफरों की तरह नहीं है जो आदिवासियों की फोटो लेकर उस गांव से निकल लिए और विश्व भर की पत्र-पत्रिकाओं में वह फोटो देकर भारत की गरीबी का मजाक बनाये या फिर धर्मातरण मिशनरीज की तरह डेरा डालकर उन्हें पथभ्रष्ट करने का कार्य करें। आर्य समाज का उद्देश्य आदिवासियों की गरीबी या मजबूरी दिखाना नहीं है। आर्य समाज मानता है आदिवासी कमजोर नहीं ताकतवर हैं। बस इस स्वाभिमानी समाज को आधुनिक शिक्षा और मुख्यधारा से जोड़ने की जरूरत है।

इस कड़ी में हमने पिछले कुछ समय में तेजी लाते हुए महाशय धर्मपाल जी के व अन्य आर्य महानुभावों के सहयोग से पूर्वोत्तर भारत से लेकर मध्य और दक्षिण भारत में स्कूल और बालवाड़ी का कार्य प्रारम्भ किया। लेकिन इन जगहों पर कठिनाई यह आती थी कि उन लोगों के बीच आर्य समाज और इसके द्वारा किये जा रहे सामाजिक उन्नति के कार्यों से कैसे अवगत कराएँ तब इसके लिए पूर्व आर्य महानुभावों ने दिल्ली में सामूहिक प्रशिक्षण शिविर लगाने का कार्य किया ताकि भारत भर से आये इन लोगों के मध्य कार्य करने वाले सज्जन एक जगह एकरूपता से यज्ञ आदि का प्रशिक्षण ले सकें। इस 15 दिवसीय शिविर में संस्कार, राष्ट्रभक्ति और चरित्र निर्माण पर विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। इस कारण आर्यसमाज की यह बालवाडी सामाजिक उन्नति का उत्तम साधन बन गई। आपस में मिलजुल कर रहने का प्यार का सन्देश घर-घर पहुँचने लगा। बच्चों के अभिभावक आर्यसमाज को इस प्रवृत्ति से खुश हुए और आर्यसमाज के निकट आये, परिचय बढ़ा। इसी वजह

– शेष पृष्ठ 7 पर

....पिछले कुछ समय में तेजी लाते हुए महाशय धर्मपाल जी के व अन्य आर्य महानुभावों के सहयोग से पूर्वोत्तर भारत से लेकर मध्य और दक्षिण भारत में स्कूल और बालवाड़ी का कार्य प्रारम्भ किया। लेकिन इन जगहों पर कठिनाई यह आती थी कि उन लोगों के बीच आर्य समाज और इसके द्वारा किये जा रहे सामाजिक उन्नति के कार्यों से कैसे अवगत कराएँ तब इसके लिए पूर्व आर्य महानुभावों ने दिल्ली में सामूहिक प्रशिक्षण शिविर लगाने का कार्य किया ताकि भारत भर से आये इन लोगों के मध्य कार्य करने वाले सज्जन एक जगह एकरूपता से यज्ञ आदि का प्रशिक्षण ले सकें। इस 15 दिवसीय शिविर में संस्कार, राष्ट्रभक्ति और चरित्र निर्माण पर विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। इस कारण आर्यसमाज की यह बालवाड़ी सामाजिक उन्नति का उत्तम साधन बन गई। आपस में मिलजुल कर रहने का प्यार का सन्देश घर-घर पहुँचने लगा है। .....

वेद-स्वाध्याय

हे पुरुष! तू ऊपर उठ

उद्यानं ते पुरुष नावयान जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि।
आ हि रोहेममृत सुखं रथमथ जिर्विर्विदथमा वदासि।। -अथर्व. 8/1/6
ऋषिः **ब्रह्मा**।। देवता - **आयुः**।। छन्दः **त्रिष्टुप्**।।

शब्दार्थ - **पुरुष**=हे जीव! **ते उद्यानम्**= तेरा उत्थान ही हो, उन्नति ही हो; **न अवयानम्**=नीचे पतन कभी नही। **ते जीवातुम्**=तेरे जीवन को **दक्षतातिम्**=बल से युक्त **कृणोमि**=करता हूं। **इमम्**=इस विद्यमान **अमृतम्**=अमृतयुक्त **सुखम्**=सुखकारी **रथम्**=रथ पर **हि**= निश्चय से **आरोह**=तू चढ़ जा। **अथ**= फिर **जिर्विः**=जीर्ण होकर, बुढ़ापे में भी **विदथम्**= ज्ञान का **आवदासि**= प्रचार करता रह।

विनय - हे पुरुष! तू इस सृष्टि में मुरझाया हुआ, गिरी हुई तबीयत से क्यों रहता है? तू उठ! तुझे तो दिनों-दिन उन्नत होना चाहिए। तू अपने-आपको विकसित करने के लिए ही संसार में आया है। तुझे जीवन द्वारा आत्मा की शक्तियों का प्रकाश करना है। तेरे जीवन को, प्राण को, बल से संयुक्त करता हूं। तेरे प्राण में महाबल भरा हुआ है, इस बल को पाकर लगातार तेरा उत्थान, उन्नति होती जाए। अपने-आपको पतित करने का, या हिम्मत हारने का क्या काम है? इस बल को तू जगाता जाएगा तो तेरा 'जीवातु' (जीवन) एक उत्तरोत्तर आनन्ददायक यात्रा हो जाएगी, अतः तू इस 'दक्ष' से युक्त होकर अब इस शरीररूपी रथ पर सवार हो जा। अभी तक तू इस पर सवार नहीं था, किन्तु शायद यह शरीर तुझपर सवार रहा है। उठ, इस शरीर का तू अधिष्ठाता है, यह रथ तेरा है। इसे अपने अधीन रखकर चला तो पता लगेगा कि यह रथ कितने सुख से चलने वाला है। तब शरीर के क्लेश, रोग आदि का तुझपर प्रभाव न हो सकेगा। प्रत्युत, तेरे प्रभाव से यह शरीर रोगादि से रहित होकर स्वस्थ हो जाएगा। यही नहीं, यदि तू इस रथ का पूरा सवार, रथी अधिष्ठाता हो जाएगा तो तू चाहे तो तेरा अमर आत्मा उस प्राण-बल द्वारा इस रथ को अमृत भी बना सकता है; सब अणिमादि सिद्धियां और -काय-सम्पत्' इसमें प्रकट हो सकती हैं। इसीलिए कहता हूं कि तू उठ! इस सुखमय अमृत-रथ पर चढ़ जा और इस द्वारा उत्तरोत्तर आत्म-विकास करता हुआ उन्नत-से-उन्नत होता जा। इस बल को पा लेने के बाद, इस रथ पर चढ़ जाने के बाद, कभी 'क्रमिक ह्रास' का नियम नहीं लग सकता है। वह प्राण-बल तुझमें दिनोंदिन बढ़ता ही जाएगा। स्वभावतः वृद्धावस्था के आने पर भी तेरी शक्ति में ह्रास नहीं आना चाहिए। उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ प्राण-बल तो वृद्धावस्था में पूर्ण विकसित हो जाता है, 'वसु' और 'रुद्र' अवस्था से उठकर उस समय प्राण 'आदित्य'-रूप हो जाते हैं। जैसे प्राण-भण्डार आदित्य सब जगह अपनी किरणों को फैलाता है, उसी प्रकार वृद्धावस्था में तू अक्षीण-शक्ति होकर अपने विशाल अनुभव-ज्ञान को सब मनुष्य-समाज के लिए प्रदान करता रह।

नोट - . 'जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि' ये शब्द मुझे परमात्मा कह रहे हैं और उन्होंने मेरे शरीर में दक्ष (बल) का संचार कर दिया है, ऐसा अनुभव कीजिए।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

शोभायात्रा या हिंसा की यात्रा?.........

सहारनपुर में हुई हिंसा पर कुछ इसी तरह के शीर्षक के साथ बीबीसी ने भारतीय एकता और जातिगत समरसता पर सवाल खड़ा किया है। दरअसल यह मामला उस समय उभरकर आया जब पिछले हफ्ते सहारनपुर के शब्बीरपुर गांव में भड़की हिंसा के बाद दलितों के घर जलाए जाने के बाद इलाके में तनाव नजर आया। इस दलित बहुल गांव में कुछ तथाकथित ऊँची जाति के लोग महाराणा प्रताप की जयंती पर शोभायात्रा निकाल रहे थे जिसके बाद हिंसक झड़प हो गई थी। दरअसल हिंसा महाराणा प्रताप को लेकर नहीं थी। हिंसा का असली कारण तेज आवाज में संगीत और फूहड़ नाच इस हिंसा की ओर इशारा कर रहा है। इसी तरह की एक अन्य घटना अभी इससे थोड़े दिन पूर्व सहारनपुर में ही अम्बेडकर शोभायात्रा के दौरान मुस्लिम समुदाय की ओर से दलितों पर हमले की खबर के बाद अखबारों में छाई थी। लेकिन मीडिया ने उस खबर को इतनी प्रमुखता नहीं दी थी।

भले ही आज लोग इस घटना को जातिवाद से जोड़कर देख रहे हों लेकिन इसमें मेरा मानना है कि धार्मिक जुलूस शोभायात्रायें या झांकियां जिनमें कोई जिम्मेदार व्यक्ति, समाज या संगठन नहीं होता वहां देश के कई हिस्सों में साम्प्रदायिक तनाव का कारण बन चुकी हैं। ऐसे आयोजनों में अधिकतर युवा वर्ग शामिल होता है जिसमें चोरी छिपे शराब तक को भी परोसा जाना नकारा नहीं जा सकता। जोशीले गीत, बढ़-चढ़ कर दिए गये जाते हैं और भाषण कई बार हिंसा के कारक बन जाते हैं। इस कारण इन्हें आप हिंसा की यात्रा भी कह सकते हैं! यदि इस ताजा मामले को देखें तो प्रशासनिक अधिकारी भी एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप करते नजर आ रहे हैं। सहारनपुर के एसडीएम मनोज सिंह ने एक टीवी चैनल को बताया कि अगर पुलिस मुस्तैद होती तो सहारनपुर के शब्बीरपुर गांव में हुई हिंसा को रोका जा सकता था।

सवाल सिर्फ एक शब्बीरपुर का नहीं है, सवाल उठता है कि महापुरुषों के नाम पर निकाली जाने वाली शोभा यात्राएं उपद्रव और हिंसा का बारूद क्यों बनती जा रही हैं? गौरतलब है कि सहारनपुर की दोनों घटनाओं में बिना अनुमति के जुलूस निकाले जा रहे थे। हमें नहीं पता शोभा यात्राओं के नाम पर जुलूस के जरिए दबंगई दिखाने की यह प्रवृत्ति कितनी जायज है? लेकिन पहले इस तरह की घटनाएँ सिर्फ देश के कुछ चुनिन्दा शहरों में देखने को मिलती थीं लेकिन अब यह रोग कस्बों और गांवों तक पहुँच गया।

अभी तक इस रोग से गाँव मुक्त थे। किसान और मजदूर की एक दूसरे पर निर्भरता लोगों को जोड़े रखती थी। जाति सूचक शब्दों का इस्तेमाल कर कथित ऊँची जाति दूसरी अन्य जातियों को प्रताड़ित न करती हो इससे कतई इंकार नहीं किया जा सकता है किन्तु वह शब्द आत्मसम्मान का सवाल नहीं बनते थे। जिस कारण जातीय संघर्ष इतना नहीं था। लेकिन जिस तरह अब जातीय नेता व मीडिया इन घटनाओं का विश्लेषण करती है उससे जातिवाद और कई गुना मजबूत हो रहा है। हर एक घटना को जातीय तराजू में तोला जाना भी राष्ट्र के लिए शुभ संकेत नहीं हैं। क्योंकि जातीय संघर्ष जोकि मात्र कुछ लोगों के कारण हुआ। मीडिया के दुष्प्रचार की वजह से पहले अड़ोस-पड़ोस के गांवों, जिलों, व इसके बाद राष्ट्रीय स्तर पर फैल जाता है।

इस घटना के बाद जब आरोप-प्रत्यारोप का दौर आया तो दलित समाज से सम्बन्ध रखने वाले देशराज सिंह कहते हैं, कि "हमें तो ये हिन्दू ही नहीं समझते वरना हमारे साथ वह यह सब करते? इस तरह के सवाल भी देश की सामाजिक समरसता पर प्रहार करते हैं। मैं यह नहीं कहता कि कथित ऊँची जाति के लोगों ने जो किया वह सही था नहीं बल्कि दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए ताकि निर्बलों, कमजोरों की न्याय और प्रशासन के प्रति आस्था बढ़े पर साथ ही इस तरह की बयानबाजी से भी बचना चाहिए।

दलितों या कमजोरों पर इस या उस बहाने होने वाले अत्याचार नए नहीं हैं। तथाकथित अगड़ा और प्रभावशाली वर्ग, हमेशा से सत्ता से अपनी नजदीकी का फायदा उठा कर कमजोर समुदाय पर अत्याचार करता रहा है। गुजरात के ऊना में गौरक्षा के नाम पर हुई हिंसा पर विपक्ष की बड़ी नेता ने तो इसे सामाजिक आतंकवाद का नाम तक दे डाला था। हालाँकि अब उत्तर प्रदेश की नई नवेली सरकार इस तरह के मामलों के प्रति सख्त रुख अख्तियार करती दिखाई दे रही है इस वर्ष अंबेडकर जयंती पर बीजेपी सरकार ने जगह-जगह समरसता भोज का आयोजन किया था वह दलितों की समानता के हक में हर कदम उठाने के लिए साथ ही उनके साथ हो रहे भेदभाव के खिलाफ भी खड़ी दिखाई भी दे रही है।

भारत के चुनावी बाजार में राजनीतिक निर्माताओं द्वारा तैयार किए गए और एक दूसरे से आगे बढ़कर दिए जा रहे बयान क्या कभी सामाजिक समरसता का सपना पूरा होने देंगे। मुझे नहीं लगता क्योंकि ऐसी घटनाओं के बाद यह लोग एक-दूसरे के विरुद्ध बड़े मोटे-मोटे शीर्षक देकर लोगों की भावनाएं भड़काते हैं और परस्पर सिर फुटौवल करवाते हैं। एक-दो जगह ही नहीं, कितनी ही जगहों पर इसीलिए दंगे हुए हैं कि स्थानीय अखबारों ने बड़े उत्तेजनापूर्ण लेख लिखे हैं। इस समय ऐसे लेखक बहुत कम हैं, जिनका दिल व दिमाग ऐसे दिनों में भी शांत हो। दूसरा सोशल मीडिया पर भ्रामक प्रचार भी ऐसे माहौल में आग में घी का काम करता दिखाई देता है।

आज समय है कि भारतीय नेता मैदान में उतरे हैं और धर्म और जाति को राजनीति से अलग करने का काम करें। झगड़ा मिटाने का यह भी एक अच्छा इलाज है और हम इसका समर्थन करते हैं। यदि धर्म को अलग कर दिया जाए तो देश में सामाजिक समरसता और विकास पूर्ण कार्यों में सभी इकट्ठे हो सकते हैं जिससे भारतीय एकता और जातिगत समरसता पर कोई विदेशी मीडिया सवाल न खड़ा कर सके।

-सम्पादक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

शतपथ ब्राह्मण में अग्निहोत्र का विवेचन

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

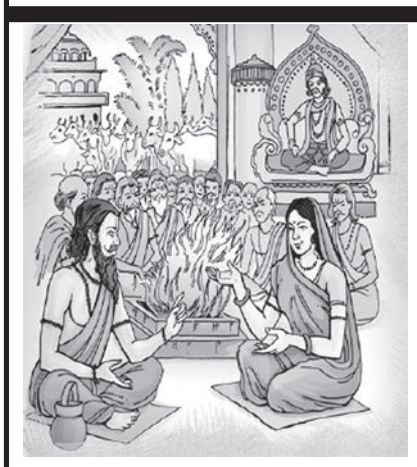

यज्ञ की भावना का मूल वेदों में देखा जा सकता है। यजुर्वेद के अनुसार-यज्ञ रूपी परमात्मा का यजन-पूजन यज्ञ के द्वारा किया जाता है। भौतिक अग्निहोत्र की विधि का निर्माण भ वेद मंत्रों को यथा स्थान, यथा क्रिया में विनियुक्त कर ही किया गया। अग्न्याधाप के मंत्र ऋषि दयानन्द ने यजुर्वेद के तृतीय अध्ययन से लिए हैं तथापि यज्ञ नैतिक मूल्यों का बाल्य प्रतीक ही है। सत्य और श्रद्धा वे मौलिक तत्त्व हैं जो यज्ञ के विधान में निहित हैं। इस आशय की एक आख्यायिका शतपथ ब्राह्मण में आती है। ध्यान रहे कि ब्राह्मण तथा उपनिषदों में आये उपास्थान (आख्यायिकाएं) ऐतिहासिक भी हैं तो कुछ रूपकात्मक तथा प्रतीकात्मक हैं। विदेह जनक से जुड़े आख्यानों को ऐतिहासिक माना जाता है। अधिकांश में ये राजा तथा ऋषियों के संवाद रूप में हैं।

ऐसे ही आख्यान का आरम्भ जनक विदेह देश का राजा तथा ऋषि याज्ञवल्क्य के संवाद रूप में शतपथ (11/3/1/2/4) में आया है। यह संवाद मूल तथा अर्थ सहित यहां दिया जा रहा है-

तद्वैतज्जनको वैदेहो याज्ञवल्क्यं पप्रच्छ। वेत्थाग्निहोत्र याज्ञवल्क्य इति।

हे याज्ञवल्क्य, क्या तुम अग्निहोत्र को जानते हो? याज्ञवल्क्य का उत्तर था- वेद सम्राडिति- हे सम्राट मैं जानता हूं।

जनक किमिति - वह अग्निहोत्र क्या है। किस पदार्थ से किया जाता है? उत्तर -पयएवेति। अर्थात् - एक शब्द में कहें तो पय (दुग्ध) तथा उससे निकला घृत ही अग्निहोत्र का मुख्य साधन है।

जनक का प्रतिप्रश्न - **यत् पयो न स्यात् केन जुहुया इति।**

यदि दुग्ध (या घृत) न मिले तो कैसे अग्निहोत्र करें? उत्तर में ऋषि ने कहा- **व्रीहियवाभ्याम्मिति।**

उस स्थिति में चावल और जौ से यज्ञ करना चाहिए। इस पर राजा ने फिर पूछा- **यद् व्रीहियवौ न स्यातां केन जुहुया इति।**

मान लें कि चावल और जौ नहीं हैं तो यज्ञ कैसे करें? उत्तर में ऋषि ने कहा- **या अन्या औषधय इति।**

जो अन्य औषधियां मिले, उनसे अग्निहोत्र करें।

जनक ने पुनः पूछा - **यदारण्या औषधयो न स्युः केन जुहुया इति।**

यदि ये जंगली औषधियां भी न मिलें तो यज्ञ किससे करें? उत्तर में ऋषि का कथन था - **वानस्पत्येन।**

उस स्थिति में बट, पीपल, शमी आदि वृक्षों की समिधाओं के द्वारा यज्ञ करें। जंगल में ये प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। जनक का अगला प्रश्न था - **यद्वानस्पत्यं न स्यात् केन जुहुया इति।**

मान लो कि किसी देश (यथा मरुस्थल) में वृक्षों के न होने से समिधाएं भी उपलब्ध न हों तो यज्ञ कैसे होगा? प्रत्युत्पनमति ऋषि का उत्तर था। **अद्भिरिति।**

इस स्थिति में जल से यज्ञ करो अर्थात् मंत्रोच्चारण पूर्वक पात्र से जल लेकर उसे अन्य पात्र में मंत्रोच्चारण पूर्वक छोड़ें।

जनक की प्रश्नावली खत्म होने वाली नहीं थी। उसने कहा **यद् उदकानि न स्युः केन जुहुया इति।** मान लो किसी देश में जल भी न मिले तो किससे यज्ञ करें? ऋषि का उत्तर था - **''न वा इह तर्हि किं च नासीत अथैनदहयतैव सत्यं श्रद्धायामिति''** यदि कुछ भी नहीं उपलब्ध हो तो श्रद्धा की अग्नि प्रज्ज्वलित कर उसमें सत्य की आहुति देवें अर्थात् यज्ञ का मूल भाव हृदय में श्रद्ध को उदीप्त करना तथा सत्य को धारण करना है। यदि याज्ञिक के मन और आचरा सत्य और श्रद्धा (सत्य के प्रतिनिष्ठा) का भाव विद्यमान है तो यह समझ लेना चाहिए कि वह सच्चा याज्ञिक है। तथापि इसका आशय यह भी नहीं है कि अग्निहोत्र के लिए आवश्यक वस्तुएं उपलब्ध होन पर भी हम इस नित्य कृत्य को न करें। अपवाद रूप में ही हमें घृत के अभाव में औषधियां, तथाभाव में जंगली वनस्पतियां, समिधाएं आदि से यज्ञ करना चाहिए। यज्ञ का न करना कथमपि उचित नहीं है। यज्ञ जिस 'यज्' धातु से निष्पन्न होता है उसमें देवपूजा, संगतिकरण तथा दान का भाव निहित है। विद्वानों का सत्कार, भौतिक देवों (जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, आकाश) का यथायोग्य उपयोग एवं उनमें संगति स्थापन तथा अभाव ग्रस्तों को अन्न, धनादि तथा जिज्ञासु को विद्या दान करना यज्ञ भावना है। यही कारण है कि शतपथ ब्राह्मण ने यज्ञ को विष्णु स्वरूप कहा यज्ञो वै विष्णुः (सर्वव्यापक) तथा उसे श्रेष्ठतम कर्म बताया **यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म।**

- नन्दन वन, जोधपुर (राज.)

बोध कथा

जीवात्मा की कहानी

आत्मा क्या है? इसके सम्बन्ध में महर्षि नारद की सुनाई एक कहानी सुनिये।

पुरंजन नाम का एक राजा था किसी समय में। एक बार उसे इच्छा हुई कि किसी नगर में जाकर रहूं। कई नगर उसने देखे, कोई भी उसे पसन्द नहीं आया। तब हिमालय के दक्षिण में उसने एक नौ द्वारों वाली नगरी देखी। यह भी देखा कि उस नगरी में एक सुन्दरी भी रहती है। दस सेवक उसकी सेवा करते हैं। पाँच फन वाला एक सर्प सदा उसकी रक्षा करता है। उस स्त्री ने भी पुरंजन राजा को देखा। दोनों एक-दूसरे को देखते ही एक-दूसरे पर मोहित हो गये। पुरंजन राजा उस नगरी में गया। उस स्त्री ने उसको अपना स्वामी बना लिया। दोनों इस नगरी में रहने लगे। रहते-रहते वर्षो व्यतीत हो गए। इनके कितने ही बच्चे भी हुए। तब अन्त में पुरंजन राजा का शरीर ढीला होने लगा। कितने ही रोगों ने उसे दबा लिया। तब एक दिन दुःखी होकर उसने वह नगरी छोड़ दी।

यह सारी कथा वास्तव में आत्मा की कहानी है, क्योंकि पुरंजन राजा कोई दूसरा राजा नहीं, यही आत्मा है और नौ द्वारों वाली जिस नगरी में आकर उसने निवास किया, वह नौ द्वारों ओर आठ चक्रों वाला यह मानव-शरीर है। वेद भगवान् ने इस नगरी का वर्णन करते हुए कहा- ***अष्ट चक्रा नव द्वारा देवानां पूरयोध्या। तस्यां हिरण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः।।***

आठ चक्रों और नौ द्वारा वाली यह वह पुरी है, जिसे कोई जीत नहीं सकता। इसमें एक चमकते हुए प्रकाश में परमात्मा के प्रकाश से आवृत वह आत्मा बैठा रहता है, जो अपने-आप में सुख-रूप है।

जिस नगरी का वेद भगवान् ने वर्णन किया है, वह मनुष्य का यह शरीर है। इसके नौ द्वार हैं- दो आँखें, दो कान, दो नथुने, एक मुख और दो मल और मूत्र त्यागने के द्वार। यह हैं नौ द्वारों वाली अयोध्या नगरी। इसमें आठ चक्र हैं- मूलाधार चक्र, स्वाधिष्ठान चक्र, मणिपूरक चक्र, अनाहत चक्र, हृदय चक्र, विशुद्धि चक्र, आज्ञाचक्र, ब्रह्मचक्र। इस नौ द्वारों और आठ चक्रों वाली नगरी में बुद्धि नामक सुन्दर स्त्री रहती है। दस इन्द्रियां उसके दस सेवक है। और पांच प्राण-पाँच फनों वाला वह सर्प है, जो इस नगरी की रक्षा करता है।

इस नगरी में आया है वह पुरंजन राजा-वह जीवात्मा और जब इस नगरी को छोड़कर निकला तो विदर्भ के राजा के नगर में जाकर एक कन्या के रूप में उत्पन्न हो गया। वह कन्या बहुत रूपवती और गुणवती थी। विदर्भ के राजा ने उसका नाम रखा अपूर्व कन्या। यह बड़ी हुई तो मलयध्वज नाम के राजा के साथ इसका विवाह हो गया। दोनों सुख से रहने लगे। परन्तु तभी एक दिन राजा मलयध्वज शीशे में अपना मुख देख रहे थे तो सिर में एक श्वेत केश दिखाई दिया। केश को देखकर वह अपूर्व कन्या से बोले-''रानी! मैं तो अब जंगल में जाकर भगवान् का भजन करूंगा, तुम चाहो तो इस राज्य को चलाओ।''

रानी ने कहा-''आपके बिना मैं कैसे रहूंगी? जहाँ आप, वहीं मैं आपके साथ चलूंगी।''

दोनों वन में पहुंचे। आश्रम बनाकर रहने लगे। परन्तु समय तो प्रत्येक स्थान पर व्यतीत होता है, वन में भी बीतने लगा। अन्ततः वह समय भी आया, जब मलयध्वज का देहान्त हो गया। रानी अपूर्व कन्या ने रो-रोकर अपना बुरा हाल कर लिया। वन में और कोई था नहीं। रोते-पीटते उसने वन में से लकड़ियां एकत्रित कीं। एक चिता बनाई। मलय ध्वज की लाश को उसके ऊपर रख दिया। अपने हाथ से उसने चिता को आग लगाई। स्वयं भी उसमें बैठ गई। अग्नि प्रज्वलित हुई। चहुं ओर लपटें फैलने लगीं। रानी अपूर्व कन्या अब भी रो रही थी। उसके क्रन्दन से वन गूंज रहा था। तभी उन लपटों में से आवाज आई-''पुरंजन! ओ पुरंजन!''

रानी ने आश्चर्य से इधर-उधर देखा, कोई भी उसे दिखाई नहीं दिया, परन्तु ध्वनि ने फिर कहा-पुरंजन! रोना बन्द करो। तुम स्त्री नहीं हो, रानी नहीं हो, अपूर्व कन्या भी नहीं हो।''

रानी ने आश्चर्य से कहा-''तुम कौन हो, जो आवाज़ दे रहे हो?''

ध्वनि ने कहा-''पहले यह समझो कि तुम अपूर्व कन्या नहीं हो। तुम पुरंजन हो। कभी तुम पुरुष थे। अब स्त्री हो। वास्तव में तुम स्त्री-पुरुष भी नहीं हो।''

रानी ने कहा-''और तुम कौन हो?''

ध्वनि ने कहा-''मैं तुम्हारा अज्ञात नाम वाला मित्र हूं और मैं ही तुम्हारा मित्र हूं, दूसरा कोई मित्र नहीं, कोई सम्बन्धी नहीं, कोई पति या पत्नी नहीं, पुत्र या पुत्री नहीं।''

तब उस पुरंजन ने अपने इस मित्र को पहचाना। तब उसने समझा कि अग्नि उसे जला नहीं सकती। इसके लिए, मलयध्वज के लिए या किसी भी आत्मा के लिए कोई मृत्यु नहीं और सबका मित्र वह एक है जिसे लोग परमात्मा, ईश्वर, परमेश्वर, शिव, शंकर, नारायण और कितने ही नामों से पुकारते हैं।

यह सारी जीवात्मा की कहानी है जो शरीर के साथ मिलकर कभी अपने-आप को अपूर्व कन्या कहता है, कभी पुरंजन, कभी मलयध्वज, कभी विदर्भराज, कभी कुछ और। कई प्रकार के सहस्रों, लाखों, करोड़ों नाम वह अपनाता है, करोड़ों रूप अपनाता है।

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

दुष्ट पादरी के कुकृत्य – वैटिकन की लीपापोती पर सवाल

.....आस्ट्रेलिया में धार्मिक और गैर धार्मिक जगहों पर होने वाले यौन शोषण की जांच करने की सबसे शीर्ष संस्था रॉयल कमीशन के अनुसार यौन शोषण पीड़ितों की कहानियां काफी अवसाद भरी है जिसमें बच्चों की उपेक्षा की गई, उन्हें सजा भी दी गई। आरोपों की जांच नहीं हुई। पादरी और धार्मिक गुरु आसानी से बच गए। संस्था के अनुसार 1980 से 2015 के बीच आस्ट्रेलिया के 1000 कैथोलिक इंस्टीट्यूशनों में 4,444 बच्चों का यौन उत्पीड़न हुआ। इन बच्चों की औसत आयु लड़कियों के लिए 10.5 साल रही है, वहीं लड़कों के लिए 11.5 साल। बच्चों के यौन शोषण से जुड़े मामलों पर नजर रखने वाली रॉयल कमीशन के पास 1980 से 2015 के बीच करीब 4,500 लोगों ने यौन शोषण होने की शिकायत दर्ज कराई थी।.....

आज से 18 साल पहले की दीपावली की बात है। जब उस रात भारतीय समाज ज्ञान रुपी प्रकाश के दीये जलाकर अज्ञानता के अंधेरे को भगाने की प्रार्थना कर रहा था। ठीक उसी समय राजधानी दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में रोमन कैथोलिक चर्च के पोप जान पाल द्वितीय अपने अनुयायियों को बता रहे थे कि ईसा की पहली सहस्राब्दी में हम यूरोपीय महाद्वीप को चर्च की गोद में लाये, दूसरी सहगस्राब्दी में उत्तर और दक्षिणी महाद्वीपों व अफ्रीका पर चर्च का वर्चस्व स्थापित किया और अब तीसरी सहस्राब्दी में भारत सहित एशिया महाद्वीप की बारी है। इसलिए भारत के मतांतरण पर पूरी ताकत लगा दो। पोप दावा कर रहे थे, ''ईसा और चर्च की शरण में आकर ही मानव की पापों से मुक्ति व उद्धार संभव है।'' उनका यह कथन भारत की एक प्रसिद्ध पत्रिका में प्रकाशित भी हुआ था। जब पोप भारत की धरती पर खड़े होकर ईसाइयत की महानता का बखान कर रहे थे उसी समय अमरीका और यूरोप के लोग पोप के दरबार में गुहार लगा रहे थे कि हमें अपने बिशपों-पादरियों के यौन शोषण से बचाओ, तुम्हारा चर्च ऊपर से नीचे तक पाप में डूबा हुआ है।

लेकिन आज का यह प्रसंग धर्मांतरण की चर्चा से थोड़ा अलग होकर पोप के उस दावे पर सवाल उठा रहा है कि ईसा और चर्च की शरण में आकर ही मानव की पापों से मुक्ति व उद्धार कैसे संभव है। जबकि हाल ही में इसी वेटिकन सिटी के पोप ने एक फैसले द्वारा मानवता को शर्मसार किया है। खबर है 30 बच्चियों से रेप के मामले में एक कैथोलिक पादरी को रोम के वेटिकन सिटी चर्च ने माफी दे दी है। बताया जा है कि इसके पीछे अहम वजह चर्च में प्रशासन की मजबूत पकड़ है। पोप की ओर से कहा गया कि मामला खत्म हो गया है। अब इसमें कुछ नहीं हो सकता है। इसी वजह से पादरी पर कोई केस नहीं चल सका जबकि 30 बच्चियों से रेप की बात उक्त आरोपी पादरी स्वीकार भी कर चुका है। अब सवाल यह है कि क्या ईसा इस पाप को क्षमा कर देंगे यदि हाँ तो फिर ये जरुर बताया जाये कि ऐसा कौन सा पाप है जिसे चर्च या ईशा क्षमा नहीं करते?

कहते हैं बच्चे भगवान का रूप होते हैं लेकिन यदि चर्चों और पादरियों के किस्से पढ़ें तो लगता है इनकी नजर में बच्चे सिर्फ शोषण के लिए मानव शरीर होते हैं। साल 2010 न्यूयार्क टाइम्स में छपी एक खबर के अनुसार 90 के दौर में एक मामला पादरी लॉरेंस मर्फी को लेकर उठा था। पादरी पर आरोप था कि उन्होंने 230 ऐसे बच्चों का यौन शोषण किया जो सुन नहीं सकते थे। अखबार के मुताबिक वर्तमान पोप ने इस मामले पर कोई कदम नहीं उठाया था। कुछ साल पहले पोप बेनेडिक्ट ने आयरलैंड में कैथलिक पादरियों द्वारा बच्चों के यौन शोषण के मामले में पीड़ितों से माफी माँगी थी। मामला इतने पर ही खत्म नहीं होता अमरीका में बच्चों के यौन शोषण के मामले में संदिग्ध 21 रोमन कैथलिक पादरियों को निलंबित कर दिया गया था। जिसके बाद उसी महीने ही ज्यूरी की रिपोर्ट आई थी जिसमें कहा गया था कि कम से कम 37 पादरी ऐसे हैं जो आरोप लगने के बावजूद काम कर रहे हैं। रोम के अखबारों में ये खबर पहले पन्ने की सुर्खियों में छपी थी। कुछ अखबारों ने इसे वैटिकन सेक्स स्कैंडल तक का नाम दिया था।

ऐसा नहीं है कि यह मामले किसी संज्ञान में नहीं आते लेकिन चर्चों की बेशर्मी के आगे यूरोप के कानून हाशिए पर चले जाते हैं। संयुक्त राष्ट्र ने कई बार बच्चों के यौन शोषण को न रोक पाने के लिए वैटिकन की निंदा की है और उन पादरियों को हटाने की मांग की है जिन पर बच्चों के साथ बलात्कार या छेड़छाड़ करने का संदेह है। लेकिन वेटिकन ने संयुक्त राष्ट्र को भी धता बताते हुए कहा था कि संयुक्त राष्ट्र चर्च से उम्मीद नहीं कर सकता कि हम अपनी नैतिक सीखों में बदलाव लाए। ''इसके बाद भी वेटिकन द्वारा यौन शोषण और ऐसा घिनौना काम करने वालों का दंड से बचाना आज तक जारी है। जबकि चर्चों के अधिकार पर संयुक्त राष्ट्र की समिति ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि कैथोलिक गिरजे में विश्व भर में करीब दस हजार बच्चों का सालों से व्यवस्थित रूप से यौन शोषण किया गया है।

आस्ट्रेलिया में धार्मिक और गैर धार्मिक जगहों पर होने वाले यौन शोषण की जांच करने की सबसे शीर्ष संस्था रॉयल कमीशन के अनुसार यौन शोषण पीड़ितों की कहानियां काफी अवसाद भरी है जिसमें बच्चों की उपेक्षा की गई, उन्हें सजा भी दी गई। आरोपों की जांच नहीं हुई। पादरी और धार्मिक गुरु आसानी से बच गए। संस्था के अनुसार 1980 से 2015 के बीच आस्ट्रेलिया के 1000 कैथोलिक इंस्टीट्यूशनों में 4,444 बच्चों का यौन उत्पीड़न हुआ। इन बच्चों की औसत आयु लड़कियों के लिए 10.5 साल रही है, वहीं लड़कों के लिए 11.5 साल। बच्चों के यौन शोषण से जुड़े मामलों पर नजर रखने वाली रॉयल कमीशन के पास 1980 से 2015 के बीच करीब 4,500 लोगों ने यौन शोषण होने की शिकायत दर्ज कराई थी।

चर्चों के पाप और अपराधियों की सूची इतनी लम्बी है कि उसे दोहराना व्यर्थ है। इस पापाचार में वेटिकन की संलिप्तता इतनी स्पष्ट है कि अब निराश श्रद्धालु विद्रोह करने पर उतारू हो गए हैं। आज हालात यह हैं कि यूरोप के लोग चर्चों से किनारा करने को बाध्य हो गये हैं। लेकिन यूरोप और अमरीका से उखड़ने के बाद अब चर्च भारत जैसे देश में गरीब और अबोध जनजातियों व दलित वर्गों के मतांतरण पर पूरी शक्ति लगा रहा है। जबकि महत्त्वपूर्ण धर्मांतरण के बजाय यह इस किस्म का पाप रोकना है। जहाँ आज चर्च को ऐसे पापाचारी पादरियों से मुक्त करना उसकी पहली चिंता होनी चाहिए पर वेटिकन किन्हीं अन्य हितों की रक्षा के लिए इन पापाचारियों को संरक्षण दे रहा है और नये-नये क्षेत्रों में मतांतरण की फसल काटने में जुटा हुआ है। यदि वेटिकन अपने आध्यात्मिक क्षेत्र में सुधार नहीं करता तब वेटिकन के कार्यों पर उसकी लीपापोती पर सवाल उठते रहेंगे।

-राजीव चौधरी

वीर सैनिकों की जय बोलो

भारत के सैनिक भारत की, करते हैं पहरेदारी।
वीर सैनिकों की जय बोलो, भारत के सब नर-नारी।।

सर्दी गर्मी वर्षा में, सीमा पर पहरा देते हैं।
कितनी भी विपदा आए, वे खुश होकर सहलेते हैं।।
वैदिक मर्यादाओं को, बलशाली वीर सहेते हैं।
इसीलिए तो ये योद्धा जनता के बड़े चहेते हैं।।
सच्चे त्यागी तपधारी हैं, महाबली परहितकारी।
वीर सैनिकों की जय बोलो, भारत के सब नर नारी।।1।।

भारत के दुश्मन भारत पर, जब जब चढ़कर आते हैं।
देव भूमि भारत में पापी, जब उत्पात मचाते हैं।।
वेद सभ्यता संस्कृति की, भारी हंसी उड़ाते हैं।
भारत के ये प्यारे योद्धा, उनका वंश मिटाते हैं।।
भारत के गौरव रक्षण में, इनका योगदान भारी।
वीर सैनिकों की जय बोलो, भारत के सब नर नारी।।2।।

अगर वीर सैनिक न होंगे, हम न बचने पाएंगे।
दुष्ट विधर्मी, इस ऋषियों के, भारत को कब्जाएंगे।।
भारत की प्यारी जनता पर, जुल्म रात-दिन ढाएंगे।
मन्दिर तुड़वाकर के मस्जिद गिरिजाघर बनवाएंगे।।
कुरान शरीफ, बाईबल के फरमान यहां होंगे जारी।
वीर सैनिकों की जय बोलो, भारत के बस नर-नारी।।3।।

भारत के सेनानी जब, दुष्टों को धूल चटाते हैं।
भारत माँ की सेवा में, जब जीवन भेंट चढ़ाते हैं।।
देश द्रोही लोग, सैनिकों पर, पत्थर बरसाते हैं।
भारत के कुछ गंदे नेता,उनका साथ निभाते हैं।।
वे सब भारत के दुश्मन हैं, जो करते हैं गद्दारी।
वीर सैनिकों की जय बोलो, भारत के सब नर-नारी।।4।।

वीर सैनिकों् सुनो ध्यान से, अपना सीना तान बढ़ो।
राम, भरत, लक्ष्मण बन जाओ, जामवंत, हनुमान बढ़ो।।
कृष्ण, भीम, अर्जुन बन जाओ, विक्रम वीर महान बढ़ो।
चन्द्र गुप्त के वंशज हो तुम, कर पूरी पहचान बढ़ो।।
''नन्दलाल'' है साथ तुम्हारे, भारत की जनता सारी।
वीर सैनिकों की जय बोलो, भारत के सब नर-नारी।।5।।

-पं. नन्दलाल निर्भय, पत्रकार
ग्रा.+पो. बहीन, पलवल (हरि.)

MDH हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो (5,10,20 किलो की पैकिंग)
अब 1 किलो एवं आधा किलो की पैकिंग में भी उपलब्ध
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, मो. 9540040339

मई-जून-जुलाई, 2017 में आयोजित होने वाले उत्सव, कार्यक्रम एवं शिविर

यज्ञ की विधि - प्रक्रिया - एकरूपता- विशेषताएं तथा यज्ञ विज्ञान के सामान्य ज्ञान हेतु

पारिवारिक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर

23 मई 2017 से 27 मई 2017

समय : प्रतिदिन प्रात: 7 से 8:30 बजे **स्थान :** एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-27

आर्यजन परिवार सहित आमन्त्रित हैं। प्रशिक्षण शिविर में न्यूनतम पति-पत्नी दोनों का सम्मिलित होना अनिवार्य है।

अधिक जानकारी के लिए सह संयोजक श्री नीरज आर्य जी (मो.9810102856) पर सम्पर्क करें। - *सतीश चड्ढा, मुख्य संयोजक*

नि:शुल्क योग साधना एवं स्वाध्याय शिविर

29 मई से 4 जून, 2017 गुरुकुल पौंधा, देहरादून

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा, देहरादून के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 29 मई से 4 जून 2017 तक गुरुकुल पौंधा में योग साधना एवं स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका** का स्वाध्याय कराया जाएगा। अपनी पुस्तक साथ लेकर जाएं अन्यथा वहां से खरीदनी पड़ेगी। शिविर पूर्णत: नि:शुल्क है। केवल आने-जाने का मार्ग व्यय खर्च होगा। दिल्ली से पौंधा बस द्वारा आना-जाना लगभग 700/- व लोकल ट्रेन से जाने वाले शिविरार्थी अपना रिजर्वेशन स्वयं करवा लें तथा सूचना दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में अवश्य दे देवें। शिविर में रहने व भोजन की व्यवस्था गुरुकुल की ओर से नि:शुल्क होगी। दिल्ली से रविवार दिनांक 28 मई 2017 को रात्रि में रवाना होंगे व रविवार 4 जून को पौंधा से वापसी होगी। शिविर में जाने के लिए सम्पर्क करें-

श्री सुखबीर सिंह, शिविर संयोजक,
मंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा मो. 09350502175, 09540012175

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली सभा द्वारा

18वां वैवाहिक परिचय सम्मेलन : 9 जुलाई, 2017

हम सब मिलकर आर्यसमाज के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए कृतसंकल्प है। इसी निमित्त हम अनेक कार्यों का सम्पादन अपने-अपने आर्य समाजों के माध्यम से निरन्तर कर रहे हैं। आर्यसमाज की विचारधारा व्यक्ति की नहीं परिवार की विचारधारा है। जब तक आर्यसमाज परिवार के साथ नहीं जुड़ेगा तब तक हम सशक्त नहीं हो सकते। इसी क्रम में आवश्यक प्रतीत हुआ कि हमें अधिक से अधिक आर्य परिवारों के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए और आर्य परिवारों के सामने एक ऐसे मंच का अभाव सा है जहां वे अपने गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार अच्छे वर-वधू का चयन कर सकें। जाति के आधार पर बने अनेक संगठन तो इस कार्य को कर रहे हैं किन्तु वैदिक विचारधारा वाले महानुभाव चाहे वे किसी भी जाति से सम्बन्धित हों उनके लिए ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी। इस हेतु सभा ने गत 7 वर्ष पूर्व आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलनों के कार्य को आरम्भ किया था। तब से इसकी उपयोगिता के चलते ये निरन्तर चलता चला आ रहा है। इस वर्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में **18वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन** रविवार दिनांक **9 जुलाई 2017** को प्रात: 10 बजे से **आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकास पुरी, नई दिल्ली-110018** से आयोजित किया जाएगा।

आर्यजन अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम 300/- रुपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न करके भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **एक्सिज बैंक** खाता संख्या **910010001816166** करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेंजे।

आर्यजनों/पाठकों एवं आर्यसमाज के सभी पदाधिकारियों/सदस्यों से निवेदन है कि अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों में बार-बार इसकी सूचना देवें तथा प्रकाशित फार्म की प्रतियां करके आर्यसमाज में रखवा लेवें, मांगने पर अपने सदस्य को दें और नोटिस बोर्ड पर लगाकर, सदस्यों को यह भी निवेदन करें कि वे अपने सम्पर्क के परिवारों को इसमें भाग लेने के लिए प्रेरित करें। सम्पर्क करें-

अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक **(मो. 9414187428)**
एस. पी. सिंह, संयोजक, दिल्ली **(मो. 9540040324)**

आपको विदित ही है कि दिल्ली की आर्य संस्थाओं ने प्रत्येक वर्ष पर्यावरण दिवस को विशेष रूप से आयोजित करने का निर्णय लिया है। इसी क्रम में गत वर्ष 5 जून के दिन दिल्ली की अनेक आर्य समाजों ने 2 से लेकर 43 यज्ञ तक सम्पन्न करवाए थे। सार्वजनिक स्थानों पर किये गये यज्ञों में बैनर लगाकर तथा यज्ञ से सम्बन्धित पत्रक बंटवाकर आम व्यक्ति को यज्ञ के महत्त्व के विषय में बताया गया था। इसी प्रकार इस वर्ष भी इस कार्य के लिए अन्तरंग सभा ने तीन दिन के समय का निर्धारण किया है। इस वर्ष हम और अधिक से अधिक व्यक्तियों तक पहुंच सकें इसलिए **3, 4 और 5 जून, 2017** का समय निर्धारित किया गया है। हम तीनों दिन अपने-अपने क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण यज्ञ करवाएं तथा वहां उपस्थित महानुभावों तक बैनर तथा पत्रकों के माध्यम से अधिकाधिक महानुभावों तक यज्ञ की उपयोगिता पहुंच सके। इस हेतु सभा ने स्पॉन्सर बैनर तथा पत्रक बनवाए हैं जो सब समाजों को जो अपने क्षेत्र में यज्ञ करवाना चाहें, नि:शुल्क दिये जाएंगे।

बैनर तथा पत्रक का मैटर सभा की वैवसाईट पर भी उपलब्ध रहेगा आप www.thearyasamaj.org से डाउन लोड करके भी अपनी आवश्यकता के अनुसार क्षेत्रीय सहयोगी महानुभाव का नाम नीचे प्रिन्ट करवा सकते हैं।

पर्यावरण शुद्धि यज्ञ में जो महानुभाव सभा से स्पॉन्सर बैनर लेना चाहें वे समाज के लैटर पैड पर लिखकर दें कि आपकी आर्यमाज की कितने स्थानों पर यज्ञ करवाने की योजना है। उसी के अनुसार प्रत्येक यज्ञ के लिए 40 पत्रक एवं एक बैनर दिया जाएगा। यदि आप/आपकी आर्य समाज/संस्थान 5 से अधिक स्थान पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करवा रहे हैं तो दो बैनर, 10 से अधिक यज्ञ हेतु 3 बैनर, 20 से अधिक यज्ञ हेतु 4 बैनर एवं 30 से अधिक यज्ञ हेतु 5 बैनर अधिकतम दिये जाएंगे। पत्रकों में नीचे खाली स्थान दिया गया है वहां आप अपने आर्य समाज की मोहर लगाकर (जिसमें फोन नं. आदि लिखा हो) वितरित करें।

यदि आपको इससे अधिक पत्रकों की आवश्यकता है तो आप सभा कार्यालय से ..... रुपये सैंकड़ा की दर से खरीद सकते हैं।

पत्रक/बैनर सभा में 28 मई से 2 जून रात्रि तक उपलब्ध होंगे। नि:शुल्क पत्रक एवं बैनर प्राप्त करने के लिए श्री सन्दीप आर्य जी 9650183339 से सम्पर्क करें।

आप जहां पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करवाएं वहां के फोटो व्हाट्सप्प नं. 9540045898 पर तुरन्त भेजें।

विशेष नोट : अपनी आर्य समाजों में यज्ञ कुण्ड एवं यज्ञ पात्रों के दो तीन सैट, यज्ञ पुस्तकें, हवन सामग्री, समिधा का पर्याप्त स्टाक रखें ताकि यदि कोई महानुभाव अपने यहां यज्ञ करवाना चाहें तो वह आप से सम्पर्क करके करवा सकें। लोकल वैलफेयर एसोसिएशन आदि से सम्पर्क करके वहां भी यज्ञ करवाने से काफी लाभ होता है। इस वर्ष बैनर में यज्ञ के लाभ का चार्ट भी दिया गया है- साथ ही पत्रक में लैबोरेट्री टैस्ट के परिणाम भी प्रकाशित किये गये हैं जो प्रचार की दृष्टि से विशेष उपयोगी होंगे। समाज के बाहर एक बोर्ड भी लगावें कि प्रत्येक अवसर पर यज्ञ करवाने की व्यवस्था है। सम्पर्क में अपने पुरोहित जी का नाम व मो. नं. भी अवश्य लिखें।

आप सबसे निवेदन है कि यज्ञ के प्रचार-प्रसार हेतु इस वर्ष अधिक से अधिक स्थानों पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ सम्पन्न करवाने की तैयारी करें तथा उन स्थानों की सूची सभा को भेजें ताकि उसके अनुरूप साधन/पत्रक आदि प्रकाशित करवाए जा सकें। - **विनय आर्य,**

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के आर्य विद्यालयों का वार्षिकोत्सव

आधुनिक भारत - ले चलें शिखर की ओर

22 जुलाई, 2017 : तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली

समस्त विद्यालय विद्यार्थियों के परिवारों सहित अवश्य पहुंचे

- सुरेन्द्र कुमार रैली, प्रस्तौता

Glimpses of the YajurVeda

- Dr. Priyavrata Das

Continue from last issue :-

The Revealed knowledge is intended for all.

"I address the auspicious speech to all men and women, intellectuals, administrators, workers and producers of wealth. May your kinsmen and strangers listen to the divine words. May you become favourite of the learned ones and of them who give liberal rewards. May my wish be fulfilled with the fulfilment of your aspiration".

The Vedas have been revealed at the dawn of creation for all and sundry. They constitute a Divine code, the First source knowledge that inspires man in all walks of life for his personal and social good. Anything godly and divine becomes the legacy of each man and woman like the sun rays, wind or water. The Vedas treat man as the son of Mother Earth and the Celestial Father. They were given to us at the earliest times when there were no geographical boundaries of land. They stand for Universal fraternity. Their core commitment is truth and harmony. They belong to the common heritage of humanity and not to a particular nation, creed or sex.

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूदाय चार्य्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भुयासमयं मे कामः समृध्यतामुपमादो नमतु।।

(Yv. xxvi.2)

Yathemam vacam kalyanim avadani janebhyah.brahma rajanyabhyam sudraya caryaya ca svaya caranaya ca. priyo devanam daksinayai daturiha bhuyasamayam me kamah samrdhyatamupamado namatu.

Truth Hidden within a Glittering Cover

"The face of Truth is hidden from the mortal man by the allurements of the tempting world posing as Truth just as the shining brass is mistaken for gold. The cosmic man, who is there in the sun, that I am myself, i.e. OM, the abstract, the Divine Supreme."

This the concluding verse of Yajurveda. Yajuh is the impeller of noble actions called Yajna expressed as 'Sresthatama Karmana' or excellent performances in the opening verse of the Text. The whole of Yajurveda is the divine guideline arousing creative thoughts and actions.

"May your longevity be secured through sacrifice (xxii.34)"

"The three divinities : the divine intellect, the divine speech and the divine culture are established in your heart, ye man' (xxvii. 20)".

'I bathe you with the effulgence of the moon' with the glare of the fire (x.17)'.

For the righteous, the wind blows sweetly, the river glides on sweetly and the herbs yield sweetness' (xiii.27).

"Let the desire to live a hundred years in the world actively engaged in his work be fulfilled. (XL-2)'.

But man confronts many adversaries in the garb of friends and well wishers. They tempt and misguide him on the wrong path. Therefore, the closing verse is a symbol of eaution 'Ye man, the outer view is not reality. Truth is concealed within a golden cover. When you open it, you will find truth. Do not be swayed away by artificial forms. In every dedication, seek the truth before you perform.'

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितमं मुखम्। योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम्। ओ३म् खं ब्रह्म।

(Yv. XL.17)

Hiranmayena patrena satyasyapihitam mukham.

yo'savaditye purusah so' savaham. Om kham brahma..

The End

Contact No. 09437053732

आओ ! संस्कृत सीखें संस्कृत पाठ - 24

गतांक से आगे....

अव्यय पदानि (indeclinables)

इन शब्दों के रुप नहीं चलते अर्थात् ये अपरिवर्तनीय हैं।

अकस्मात् suddenly अचानक
अग्रतः in front of सामने से
अग्रे ahead आगे
अज्ञानतः out fo ignorance अनजाने में
अन्तर in, into भीतर
अतः therefore इसलिए
अतीव exceedingly अत्यधिक
अत्र here यहाँ
अद्य today आज
अधः below नीचे
अधुना now अब
अन्यत्र elsewere दूसरी जगह
अपि also भी
अरे oh सम्बोधन हे
अलम् enough बस/रहने दो
अवश्यम् definitely अवश्य
आम् yes हाँ
इतः from here इधर से
इतःस्ततः here and there इधर उधर
इदानीम् just now अब
इव similar समान
इह here यहाँ
उच्चैः loudly जोर से
उभयतः from both sides दोनों तरफ
ऋते without बिना
एकत्र together एक जगह/इक्ट्ठा
एकदा once एक बार
एव only ही/ केवल
एवम् thus इस तरह
कति how many? कितना
कथम् how? कैसे
कथमपि somehow कैसे भी
कदा when? कब
कदाचित् anytime कभी भी
किञ्चित् little कुछ
किन्तु but परन्तु
किम् who, what, which क्या/कौन
किमर्थम् why किसलिए
किल् indeed निश्चय
कुतः from were कहाँ से
कुत्र were कहाँ
कुत्रचित् somewere कहीं/कहाँ पर
केवलम् only केवल
क्वचित् in some place किसी जगह
खलु indeed निश्चय
च and और
चेत् if so तो
नो चेत् if not नहीं तो
झटिति quickly शीघ्र
ततः from there वहाँ से
तथा so तथा
तदर्थम् for that उसके लिए
तदा then तब
तदानीम् at that time तब/उस समय
तद्वत् similarly उस तरह
तस्मात् from that, therefore उससे
तर्हि then तो
तावत् that much तक
तूष्णीम् silent चुप
दूरम् far दूर
धिक् fie धिक्कार
न, नहीं no निषेध
ननु, नु truly सच में/निश्चय
नमः salutation नमस्कार
नाम by name नाम
नीचैः below, softly नीचे
परन्तु but किन्तु

- *क्रमशः* -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

प्रेरक प्रसंग **आर्यसमाजियों की श्रद्धा तथा सेवाभाव**

संस्थाओं के झमेलों ने आर्यसमाज के संगठन और प्रचार को बड़ी क्षति पहुँचाई है। कभी-कभी देखकर लगता है कि आर्यसमाजियों में श्रद्धा नहीं है।

प्रस्तुत प्रसंग इसका ऐतिहासिक उदाहरण है-

आर्यवीरों ने देश-धर्म के लिए कितने बलिदान दिये हैं। आर्यों की श्रद्धा तथा सेवाभाव का एक उदाहरण यहाँ देते हैं। लाहौर में एक महाशय सीतारामजी आर्य होते थे। इन्हीं को चौधरी सीताराम कहा जाता था। ये आर्यसमाज के सब कार्यों में आगे-आगे होते थे, इसलिए इन्हें चौधरी सीताराम आर्य कहा जाता था। लाला जीवनदासजी की चर्चा करते हुए भी हमने इनका उल्लेख किया था।

ये लकड़ी का कार्य करते थे। इनकी दुकान आर्यसमाज के प्रमुख लोगों के मिलन तथा विचार-विमर्श करने का एक मुख्य स्थान होता था। आर्ययुवक जो स्कूलों, कॉलेजों में पढ़ते थे, वे उनकी दुकान का चक्कर लगाये बिना न रह सकते थे।

एक बार महाशय सीतारामजी को निमोनिया हो गया। वे कई दिन तक अचेत रहे। उनके आर्यसमाजी मित्रों ने उनकी इतनी सेवा की कि बड़े-बड़े धनवानों की सन्तान भी ऐसी देखभाल न करे। लाहौर के बड़े-से-बड़े डॉक्टर को आर्य लोग बुलाकर लाये। अपने-आप औषिधियाँ लाते। आर्यवीरों ने दिन-रात अपना समय बाँट रक्खा था। हर घड़ी उनकी सेवा और देखभाल के लिए आर्यपुरुष उनके पास रहते।

वे गृहस्थी थे। पत्नी आज्ञाकारिणी थी। पुत्र भी धर्मप्रेमी थे। महाशय राजपालजी का मुसलमान हत्यारा जब छुरे का वार करके भागा था तो इन्हीं महाशयजी के सुपुत्र श्री विद्यारत्न ने ही उसे पकड़ा था। एक और आक्रमण के समय क्रूर घातक को स्वामी श्री स्वतन्त्रानन्दजी महाराज ने धर दबोचा था।

हमारा इस प्रसंग को छेड़ने का अभिप्राय यह है कि ऐसे सद्गृहस्थी के घर में सब-कुछ था तथापि आर्यभाईयों में अपने इस आदर्श कर्मवीर के लिए इतना प्यार था, उनके प्रति ऐसी श्रद्धा थी कि उनके रुग्ण होने पर उनकी सेवा करने के लिए आर्यों में एक होड़ और दौड़-सी थी। जब महाशयजी स्वस्थ हुए तो इस सेवाभाव, इस भ्रातृभाव से इतने प्रभावित हुए कि अब वे पहले से भी कहीं अधिक आर्य सामाजिक कार्यों में जुटे रहते। वे दुकानदार भी थे और प्रचारक भी। वे कार्यकर्त्ता भी थे और संगठन की कला के कलाकार भी थे।

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

वैदिक सत्संग मण्डल रोहिणी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वैदिक सत्संग मण्डल रोहिणी सैक्टर -15 का वार्षिकोत्सव 30 अप्रैल 2017 को सम्पन्न हुआ। वार्षिकोत्सव में स्थानीय पार्षद श्रीमती प्रीति अग्रवाल, श्री विनोद कुमार महेन्द्रु एवं पूर्व पार्षद श्री विजय प्रकाश पाण्डेय उपस्थित हुए। इस अवसर पर विद्यार्थियों के लिए ''ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना'' के मंत्रों की मंत्रपाठ प्रतियोगिता आयोजित की गई। **-डॉ. वी.पी. शास्त्री**

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज राजनगर पार्ट-2
पालम कालोनी, नई दिल्ली

प्रधान - श्री कर्मवीर सिंह आर्य
मंत्री - श्री रतन सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री भगत सिंह राठी

आर्य समाज सरदार पटेल मार्ग,
खलासी लाईन, सहारनपुर (द.प्र.)

प्रधान - श्री विजय कुमार गुप्ता
मंत्री - श्री रविकांत राणा
कोषाध्यक्ष - डॉ. राजवीर वर्मा

आर्य केन्द्रीय सभा, सोनीपत

प्रधान - श्री रणधीर सिंह ढुल्ल
महामन्त्री - श्री सुदर्शन आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री अशोक आर्य

सेवक चाहिए

आर्यसमाज प्रशान्त विहार ए ब्लाक, दिल्ली को एक सेवक की आवश्यकता है। उचित वेतन एवं आवास व्यवस्था प्रदान की जाएगी। इच्छुक सेवाभावी महानुभाव सम्पर्क करें। ***-सोहनलाल मुखी, मन्त्री***
मो. 9811849523

''विश्ववारा संस्कृति'' पत्रिका का शुभारम्भ

आर्य समाज नोएडा की ओर से सत्य और ज्ञान से भरपूर ''विश्ववारा संस्कृति'' का प्रकाशन किया है जिसका वार्षिक शुल्क 250/- है। प्रबुद्ध आर्यो, सुधि पाठकों, विद्वानों से आग्रह है कि पत्रिका को आगे बढ़ाने में सहयोग प्रदान करें।

-कै. अशोक गुलाटी, महामंत्री

राज्यपाल द्वारा स्वर्ण पदक

गुरुकुल आश्रम आमसेना, नुआपड़ा ओडिशा के आचार्य मनुदेव (व्याकरणाचार्य, दर्शनाचार्य), ब्र. निरंजन आर्य (व्याकरणचार्य), ब्र. राकेश आर्य (व्याकरणाचार्य), आदर्श कन्या गुरुकुल की आचार्या सुश्री पुष्पा जी (वेदाचार्य), ममता जी (व्याकरणाचार्य), गीता जी (साहित्याचार्य) को अप्रैल 2017 में हरियाणा के महामहिम राज्यपाल ने अपने कर कमलों द्वारा स्वर्ण पदक प्रदान कर सम्मानित किया। छात्रों के गुरुकुल में पहुंचने पर भव्य स्वागत किया गया।

-स्वामी व्रतानन्द सरस्वती, आचार्य

वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

आर्य समाज रावतभाटा द्वारा कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए वैदिक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता जुलाई 2017 में आयोजित की जा रही है। इस प्रतियोगिता में विद्यार्थियों को प्रश्नों के उत्तर घर से लिखकर लाने होंगे। प्रत्येक विद्यार्थी को सत्यार्थ सुगध पुस्तक दी जाएगी एवं विजयी विद्यार्थियों को स्वर्ण, रजत, कांस्य पदक व प्रमाण पत्र प्रदान किये जाएंगे। विस्तृत जानकारी के लिए श्री ओम प्रकाश आर्य मंत्री आर्य समाज रावतभाटा, शाखा कोटा, जिला-चित्तौडगढ़ (राज.) से सम्पर्क करें। **- मन्त्री**

तृतीय आर्य पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

पं. ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति स्मृति में तृतीय आर्य पुरोहित प्रशिक्षण शिविर 28 मई से 4 जून 2017 के बीच आर्य समाज कलकत्ता 19 विधान सरणी कोलकाता में आयोजित किया जा रहा है। आयोजक बंगीय वेद प्रचार सभा एवं संयोजिका श्रीमती पं. अर्चना शास्त्री हैं।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून का वार्षिकोत्सव समारोह 14 मई, 2017 को आयोजित किया गया। इस अवसर पर आर्य पुरोहित सभा दिल्ली के प्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी को ट्रस्ट के प्रधान श्री दर्शन अग्निहोत्री जी द्वारा सम्मानित किया गया। **- *मन्त्री***

63वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज खलासी लाईन, सहारनपुर के 63वें वार्षिकोत्सव के समापन सत्र महिला सम्मेलन में सम्मान, सृजन और शक्ति का प्रतीक नारी का वेद में स्थान विषय पर विभिन्न विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये। आचार्य भीष्म ने भजनों के माध्यम से कहा 'तू ही लक्ष्मी, तू ही सरस्वती, तू ही दुर्गा भवानी, जग ने जानी तेरी अमर कहानी।' आचार्य धीरज सिंह ने कहा 'गृहणी से रहित घर तो जंगल के समान होता है। स्त्री का अधिकार पुरुषों के बराबर नहीं पुरुषों से बड़ा है। वेदों से दूर होने के कारण ही स्त्रियों से पक्षपात हुआ है और स्त्रियों को सुनियोजित ढंग से अधिकार विहीन किया गया, कमजोर किया गया। पति-पत्नी को दूध में जल के समान एक रस होकर रहना चाहिए।' कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती सीमा ने की एवं मंच संचालन श्रीमती मीना वर्मा ने किया। **- *रविकान्त राणा, मंत्री***

ध्यान योग साधना कार्यशाला

आर्य समाज अशोक विहार-1 में आचार्य प्रभामित्र जी के सान्निध्य में 18 से 21 मई तक ध्यानयोग साधना एवं ओंकार उपासना कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। **- *प्रेम सचदेवा, प्रधान***

दिव्य सत्संग समारोह सम्पन्न

आर्य समाज आर्यपुरा सब्जी मंडी में 21 से 23 अप्रैल तक स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक जी के सान्निध्य में दिव्य वैदिक सत्संग समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: एवं सायं यज्ञ भजन एवं प्रवचनों का कार्य चलता रहा। अन्तिम दिन की उपस्थिति लगभग 250 रही। **- *सुषमा लोधी, प्रधाना***

10 दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का आयोजन

संस्कृत शिक्षक संघ एवं संस्कृत अकादमी के संयुक्त तत्वावधान में 10 दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर पूर्वी दिल्ली के रामनगर क्षेत्र में ज्ञानदीप मॉडल स्कूल में किया गया है। शिविर का उद्घाटन वेद मंत्रों के उच्चारण के साथ प्रारम्भ हुआ। मुख्य अतिथि डॉ. जीतराम भट्ट ने कहा कि संस्कृत भारत का मार्गदर्शन करने वाली भाषा है। भारत की भावी पीढ़ी को इसे अवश्य जानना चाहिए और इसको पढ़ना चाहिए। श्री क्षेत्र चंद्र शर्मा ने बच्चों को संस्कृत काव्य के महत्त्व से अवगत कराया। विशिष्ट अतिथि श्री जयंती प्रसाद मिश्र ने भारत के अतीत को संस्कृत भाषा के साथ जोड़ते हुए व्याख्यायित किया।

ज्ञानदीप मॉडल विद्यालय के प्रबंधक श्री रामपाल पांचाल जी ने आए हुए सभी महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया

-संदीप उपाध्याय

प्रथम पृष्ठ का शेष

से आसाम, नागालैंड, बामनिया आदि जगहों पर वैदिक महासम्मेलन में आज हजारों की संख्या में लोग भाग ले रहे हैं।

आर्य समाज चाहता है आदिवासी नागरिक भी सामान्य भारतीयों की तरह आधुनिक जीवन शैली तथा उपलब्ध सुविधाओं का उपभोग करें। हाँ यह बात सही है कि अपने जल, जंगल-जमीन में सिमटा यह समाज शैक्षिक आर्थिक रूप से पिछड़ा होने के कारण राष्ट्र की विकास यात्रा के लाभों से वंचित है। इसी कारण आदिवासी साहित्य अक्षर से वंचित रहा, इसलिए वह अपने यथार्थ को लिखित रूप से न साहित्य में दर्ज कर पाया और न ही इतिहास में।

भारतीय संस्कृति के ज्ञान का विस्तार होते रहना चाहिए भारतीय संस्कृति व प्राचीन परम्पराओं का प्रशिक्षण देते हुए पिछले 35वर्षों से चल रही इस सामाजिक, आध्यात्मिक उन्नति से हजारों लोगों को संस्कारित कर आर्यसमाज अपना कर्त्तव्य पालन कर रहा है। इस कार्यक्रम का विशेष महत्त्व यह है कि शिविर में ओडिशा, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, आसाम, छत्तीसगढ़, उत्तराखण्ड नागालैंड, झारखण्ड आदि प्रदेशों से शिविरार्थी आते हैं। इस शिविर के माध्यम से शिविरार्थियों को भारतीय संस्कृति की शिक्षा और स्वाबलम्बी बनने की प्रेरणा दी जाती है। इस शिविर के माध्यम से प्रशिक्षण लेकर आदिवासी क्षेत्रों के लोग अपने गांव के लोगों को बालवाड़ियों के माध्यम से शिक्षित करते हैं। भारतीय समाज की विभिन्नता में एकता का सबसे सुन्दर उदाहरण इस शिविर में देखने को मिलता है।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्य समाज अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के सान्निध्य में विद्यार्थियों के संस्कार, राष्ट्र भक्ति एवं चरित्र निर्माण हेतु 14 मई से 28 मई 2017 तक 36 वां वैचारिक क्रांति शिविर आयोजित करने जा रहा है। आप सभी धर्म प्रेमियों एवं राष्ट्र प्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि कृपया आप राष्ट्र निर्माण के इस निर्धारित कार्यक्रम में सहयोग करें तथा पधार कर शिविरार्थियों को अपना आशीर्वाद प्रदान करें ताकि आने वाले भारत का भविष्य उज्जवल बनें।

- *विनय आर्य, महामन्त्री*

जहांगीरपुरी में आर्यसमाज मन्दिर के लिए भूमि क्रय एवं लघु भवन निर्माण हेतु सहयोग की अपील

आपको जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि दिल्ली के जहांगीरपुरी क्षेत्र में आर्यसमाज मन्दिर के भवन निर्माण के लिए भूमि क्रय कर ली गई है जिसके मूल्य भुगतान के लिए 90 दिन का समय लिया गया है। भुगतान की अन्तिम तिथि 24 जुलाई, 2017 निर्धारित की गई है।

विदित हो कि दिल्ली के झुग्गी-झोपड़ी कालोनी - जहांगीरपुर में आर्य समाज की गतिविधियां विगत 40 वर्षों से संचालित की जा रही थीं किन्तु मन्दिर निर्माण के लिए भूमि खरीदी नहीं जा सकी थी। अब आर्यसमाज एवं सभा के सहयोग से भूमि खरीद ली गई है और इस पर लघु मन्दिर निर्माण कार्य आरम्भ किया जाना है।

इस हेतु समस्त आर्यसमाजों, दानी महानुभावों, सहयोगी संस्थानों, संगठनों से सहयोग सादर अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि अधिक से अधिक धनराशि का सहयोग नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से प्रदान करके पुण्य के भागी बनें।

कृपया अपनी सहयोग राशि का चैक/बैंक ड्राफ्ट **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम बनवाकर सभा कार्यालय - **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1** के पते पर भिजवाने की कृपा करें। आप चाहें तो अपनी दानराशि सीधे सभा के निम्न बैंक खाते में जमा कर सकते हैं।

कृपया राशि जमा करते ही श्री मनोज नेगी जी 9540040388 को सूचित करें तथा अपनी जमा पर्ची aryasabha@yahoo.com पर ईमेल कर दें ताकि रसीद भेजी जा सके।

भारतीय स्टेट बैंक
खाता सं. 33723192049
IFSC : SBIN0001639

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है।

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य **विनय आर्य**
प्रधान **महामन्त्री**

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 15 मई, 2017 से रविवार 21 मई, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 18/19 मई, 2017

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 17 मई, 2017

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल द्वारा बंगलादेश में वेद प्रचार एवं महायज्ञ

बांगलादेश में आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती को याद करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल (भारत) द्वारा वेदवाणी एवं महायज्ञ का एक विशाल कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम 6 से 14 अप्रैल 2017 के मध्य सम्पन्न हुआ। बांगलादेश में पहली बार इस तरह का दस दिवसीय कार्यक्रम अलग-अलग स्थानों पर किया गया। कार्यक्रम के दौरान श्री जगदीश प्रसाद केड़िया ने सैकड़ों सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियां वितरित कीं। बांगला देश में ओम प्रकाश सेवा आश्रम जामिरा बकूल तल्ला, दिनाजपुर, थाना-पोचागंज, रहिमानपुर, सदर ठाकुरगांव, बाजबुनिया, बाघेरहाट खुलना, बरीशाल, नाजिरपुर, पिरिषपुर, ढाका विश्व विद्यालय, के जगन्नाथ हॉल में भी आर्य प्रतिनिधि सभा प. बंगाल (भारत) द्वारा वेद प्रचार एवं महायज्ञ किया गया जिसमें डॉ. आचार्य ब्रह्म दत्त जी के नेतृत्व में श्री बिभास सिद्धान्त शास्त्री, श्री समीकरण आर्य, श्री अनुकूल ठाकुर उपस्थि थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में हरिपद बाबू एवं विश्वजित राय जी की विशेष भूमिका रही। *-समीकरण आर्य*

प्रथम पृष्ठ का शेष

पर गुजरात से पधारे स्वामी धर्म बन्धु जी ने सभी शिविरार्थियों को बताया कि यदि वह जीवन के पहले 25 साल मेहनत करेंगे तो भी 75 साल सुखमय जीवन व्यतीत करेंगे अन्यथा 25 साल सुख में बिताएंगे तो बाकी के 75 साल दुख में ही गुजारने होंगे। इस अवसर पर एस एम आर्य पब्लिक स्कूल की प्रिंसिपल श्रीमती अमिता नागपाल जी, केन्द्रीय विद्यालय सैनिक विहार की प्रिंसिपल रीना सिंह वर्मा एवं रानी बाग से नवनिर्वाचित निगम पार्षद वंदना जेटली का सम्मान किया, जिसके लिए उन्होंने खट्टर जी का धन्यवाद किया एवं उनके कार्यों को सराहा और आश्वासन दिया कि वे हर कार्य के लिये सदैव तत्पर रहेंगी एवं खट्टर जी के हर आदेश का पालन करेंगी। इस बीच महाशय जी को उनके जन्मदिवस पर आशीर्वाद दिया। शिविर के संयोजक श्री दयासागर एवं जीववर्धन शास्त्री जी का धन्यवाद किया एवं सेवाश्रम संघ के उपप्रधान श्री धर्मपाल गुप्ता जी ने शिविरार्थियों को सम्बोधित किया। शिविर का समापन 28 मई को कॉस्टीट्यूशन क्लब के मावलंकर हॉल में प्रातः 10 बजे होगा। आप सभी आर्य जन अधिक से अधिक संख्या में पहुंच कर कार्यक्रम की शोभा बढाएं। - **मन्त्री**

प्रतिष्ठा में,

क्षेत्रीय गोष्ठियों का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में दोपहर 3 से सायं 7:15 बजे तक दिल्ली की आर्यसमाजों की क्षेत्रवार गोष्ठियों का आयोजन किया गया है। आपसे निवेदन है कि आप अपनी आर्यसमाज के सभी महत्त्वपूर्ण अधिकारियों तथा सक्रिय महिला पदाधिकारियों को भी साथ लाएं ताकि चर्चाएं तथा सूचनाएं समस्त आर्यजनता तक सरलता से पहुँचाई जा सके और गोष्ठी के उद्देश्यों को पूर्ण किया जा सके। आपसे यह भी निवेदन है कि यदि आप किसी कारणवश अपने क्षेत्र की गोष्ठी में न पहुंच पाएं, तो अन्य क्षेत्र की गोष्ठी में अवश्य ही पहुंचने का प्रयास करें। तिथियों में परिवर्तन सम्भव है। शेष स्थान बाद में सूचित किए जाएंगे। गोष्ठी के उपरान्त समस्त उपस्थित महानुभावों के लिए सुन्दर प्रीतिभोज की व्यवस्था आर्यसमाज की ओर से की जाएगी।

पश्चिम दिल्ली-1

आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी

रविवार : 25 जून, 2017

पश्चिम दिल्ली-2

आर्यसमाज कीर्ति नगर

रविवार : 2 जुलाई, 2017

उत्तरी दिल्ली

आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स, कमला नगर

रविवार : 9 जुलाई, 2017

पूर्वी दिल्ली

आर्यसमाज सूरजमल विहार

रविवार : 16 जुलाई, 2017

दक्षिण दिल्ली

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश, पार्ट-2

रविवार : 23 जुलाई, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह